द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:56 -

□□□ - हम सब परमेश्वर की स्तुति में □क गीत गाएंगे, गीत क्रमांक-------- □ □□ □□□□□□□
□□□□□□□ □□ □□□ □□

1. हे स्वामी स्वर्ग जगत के
हम तेरी स्तुति करेंगे
हम क्या दे सकते हैं तुझे
जो देता सब□

2. पवन और घाम मन भावने और फल और फूल और सारे पेड़ है कटनी तेरी कृपा से जो देता सब□

3. प्रेम कुशल तूने दिया हैऔर जो कुछ जगत भर का है हम क्यों न करें तेरी जय जो देता सब □

4. और तूने भेज केपुत्र को
इस जग केलिये दिया है और उसकेसाथ भी सभों को तू देता सब□

5. तू आत्मा हमें देता है जो जीवन दान और अक्षय है और उसकेवर उंडेलता हैहम सभों पर□

6. पाप मोचन तुझ से मिला हैऔर स्वर्ग का भी अमित निश्चय अब तुझे हम क्या दे सकेंजो देता सब□

7. जो कुछ हम तुझे देते हैं सो क्षय न कभी होता है तू उसे ले वह तेरा है जो देता सब□ □□□□□

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:56 -

□□□□ -

हे प्रेमी, दयालु और अनुग्रहकारी पिता परमेश्□वर प्रभु यीशु मसीह के नाम से तेरे अनुग्रह के सिंहासन सामने आ□ हैं□ हम तेरा धन्□यवाद करते है तेरी सारी उत्तम आशीषों और वरदानों के लि□ □ पिता हम तेरा धन्□यवाद करते हैं कि तू हमारी लालसाओं को उत्तम पदार्थो से तृप्□त करता है और हमें किसी भली वस्□तु की कमी नहीं होने देता है□ पिता आज हम -------- (नाम) परिवार की इस बड़ी उपलब्धि के लि□ तेरा धन्□यवाद करते हैं□ हम जानते हैं पिता कि तू ही हमें स्□त्रोत उपलब्□ध कराता है और हमारे परिश्रम को आशीषित करता है□ जब हम इस भूमि को तुझे समर्पित करते हैं तो पिता तेरी उपस्थिति, तेरी सुरक्षा आज से निरन्□तर इस स्□थान पर बनी रहे और यह स्□थान तेरी महिमा और तेरी गवाही का स्□थान हो□ सम्□पूर्ण आराधना विधि पर □वं यहां उपस्थित प्रत्□येक जन पर तेरी आशीष मांगते हैं और इस विनती को अपने उद्धारकर्ता मुक्तिदाता प्रभु यीशु मसीह के नाम से मांगते हैं□ आमीन!

□□□□□□□ -

पुराने नियम में भूमि के अर्पण □वं यहोवा के लि□ पवित्र ठहरा□ जाने का उल्□लेख है□ तब से अब तक मसीही इस विधि का पालन करते हैं□ आज हम इसी अभिप्राय से यहां □कत्रि□त हु□ हैं कि इस भूमि को परमेश्□वर को समर्पित करें कि यहां जो भी निर्माण कार्य हो, वह परमेश्□वर की उपस्थिति, अगुवाई, आशीष □वं निर्देशन में हो और इस स्□थान से उसकी महिमा और गवाही हो□

□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□□

□

□□□□□ □□□ -

“

हे मेरे मन, यहोवा को धन्□य कह, और कुछ मुझ में है, उसके पवित्र नाम को धन्□य कहें! हे मेरे मन, यहोवा को धन्□य कह, और उसके किसी उपकार को न भूल; जो तेरे सब अधर्मो को क्षमा करता और तेरे सब रोगों को चंगा करता; जो तेरे प्राण को गड्ढे में से उबारता और तेरे सिर करूणा और दया का मुकुट पहनता; जो तेरी लालसाओं को भली वस्□तुओं से तृप्□त करता है, जिस से तेरी जवानी उकाब के समान फिर से नई हो जाती है□ यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी, विलम्□ब से कोप करने वाला और अति करूणामय है□

”

(□□□ □□□□□□ 103:1-5,8)

“

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:56 -

उसने हमारे पापों के अनुसार हमसे व्यवहार नहीं किया, न हमारे अधर्म के अनुसार हमें बदला दिया। जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊंचा है, वैसे ही उसकी करूणा उन पर महान् है जो उस से डरते हैं। उदयाचल से अस्ताचल जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हमसे उतनी ही दूर कर दिया है। जैसे पिता अपने बच्चों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा उन पर दया करता है जो उस से डरते हैं। क्योंकि वह हमारी सृष्टि को जानता है; उसे स्मरण रहता है कि हम धूल ही हैं। मनुष्य की आयु घास के समान है; वह मैदान के फूल के समान फूलता है, जो हवा का झोंका लगते ही ठहर नहीं पाता, और फिर उसका स्थान भी उसे नहीं पहचानता, परन्तु यहोवा की करूणा अपने भक्तों पर सदा-सर्वदा और उसकी धार्मिकता उनके नाती-पोतों पर बनी रहती है, अर्थात् उन पर जो उसकी वाचा का पालन करते, और उसके उपदेशों पर चलना याद रखते हैं। हे यहोवा की सारी सृष्टि उसके राज्य के सब स्थानों में उसको धन्य कह। हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह!
''

(□□□ □□□□□□ 103:10-18,22)

□□□□□□ "याह की स्तुति करो! हे मेरे प्राण, यहोवा की स्तुति कर! मैं जीवन भर यहोवा की स्तुति करता रहूंगा। जब तक मेरा अस्तित्व है मैं अपने परमेश्वर का स्तुतिगान करता रहूंगा। शासकों पर भरोसा मत रखो, अर्थात् नश्वर मनुष्य पर जिसमें उद्धार करने की शक्ति नहीं। उसका प्राण निकल जाता है, वह मिट्टी में मिल जाता है; उसी दिन उसकी योजनाएं नष्ट हो जाती हैं। क्या ही धन्य है वह जिसका सहायक याकूब का परमेश्वर है, और उसकी आशा अपने परमेश्वर यहोवा में है; जिसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है, सब को बनाया, जो

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:56 -

सदा के लि□ विश्□वासयोग्□य र□हता है; जो सता□ हुओं का न्□याय चुकाता है; जो भूखों को भोजन देता है□ यहोवा बन्दियों को स्□वतंत्र करता है□ यहोवा अन्□धों की आंखें खोलता है, यहोवा झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है, यहोवा धर्मियों से प्रेम रखता है□ यहोवा परदेशियों की रक्षा करता है, वह अनाथ और विधवा का सहारा है,, परन्□तु दुष्□ट के मार्ग में विघ्□न डालता है□ यहोवा सदा के लि□ राज्□य करेगा, हे सिय्योन, तेरा परमेश्□वर पीढ़ी से पीढ़ी तक राज्□य करता रहेगा□
,,

(□□□ □□□□□□□ 146:1-10)

□□□□□□□□□□□ □□□□□

–

□□□ – भूमि को समर्पित करने से ज्□यादा आवश्□यक है कि हम स्□वयं के जीवन, समय, योग्□यता को सम्□पूर्णता के साथ उसकी म□हिमा और गवाही के लि□ समर्पित करें और उसकी आज्ञाओं के अनुरूप, विश्□वासयोग्□यता का जीवन जि□ं□ इन भावों के साथ प्रार्थना के रूप में □क गीत गा□ंगे□

□□□ - □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:56 -

1.

प्रभु मेरा जीवन ले,

तेरा हो यह अभी से,

ले समय कि वह भी हो

तेरी स्□तुति करने को□

2. ग्रहण कर इन हाथों को,

इनसे तेरी सेवा हो,

मेरे पांव भी योग्□य कर

काम करें वह जीवन भी□

3. वाणी ले, कि तेरी ही

गाऊं स्□तुति, प्रभु जी!

ले होंठों को, भर

सनदेश

कि सुनाऊं देश विदेश□

4. मेरा सोना चांदी ले,

भूमि के समर्पण की विधि

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:56 -

कुछ न रख छोड़ू तुझ से,
बुद्धि ज्ञान जो हों मेरे
अब तू अपने वश में ले।
5. इच्छा को भी वश में कर,
तेरी रहे जीवन भर,
ले तू मेरा मन मलीन
कि तुझ में ही हो लौलीन।

6. मेरे ह्रदय का साराप्रेम हे प्रभु, हो तेरा,ग्रहण कर,
मैं रहूंगा तेरा, सदा सर्वदा।
भूमि पर गेंती चलाकर यह कहते हुए उसे परमेश्वर को अर्पित करें।
“

6 / 8

द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:56 -

इस भूमि को हम परमेश्□वर के द्वारा ठहराये ग□ विशेष प्रयोजन के लिये पिता, पुत्र और पवित्र आत्□मा के नाम से समर्पित करते हैं□
,,

□□□□□ □□□□□□□□□

–

हे पिता परमेश्□वर इस आशीषित अवसर के लि□ हम तेरा धन्□यवाद करते हैं□ तेरी दया, अनुग्रह और आशीषों के लिये हम तेरी महिमा करते□ पिता इस स्□थान पर तेरी सुरक्षा बनी रहे□ जो भवन निर्माण का कार्य हो वह सब तेरी अगुवाई और निर्देशन में हो□ हर प्रकार की रूकावट, बाधा और घटी-कमी तेरी सामर्थ्□य से दूर हो□ जो भवन निर्मित होता है उससे तेरी गवाही हो□
आज के इस आशीषित और आनन्□द के

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:56 -

अवसर पर जो स्□वल्□पाहार हमारे लि□ तैयार किया गया है उसे तू आशीषित कर कि उसके ग्रहण करने के द्वारा जो शक्ति हम प्राप्□त करें उसे तेरी महिमा में खर्च करें और हम जीवन पर्यन्□त तेरे अच्□छे, सच्□चे, कर्मठ और विश्□वासयोग्□य दास और आसियां बने रहें □ सभों पर तेरी आशीष चाहते हैं और इस विनती को अपने उद्धारकर्ता, मुक्तिदाता प्रभु यीशु मसीह के नाम से मांगते हैं□ आमीन!